पाठ 2

अपना स्थान स्वयं बनाइए

(प्रस्तुत कहानी में लेखक द्वारा बच्चों को कर्मठ और सदाचारी बनने की प्रेरणा दी गई है।)

राजा ने एक दिन अपने मंत्री से कहा, ”मुझे अपने लिए एक आदमी की जरूरत है। कोई तुम्हारी निगाह में जँचे तो लाना, पर इतना ध्यान रखना कि आदमी अच्छा हो।" बहुत दिनों की जाँच -पड़ताल के बाद मंत्री को एक युवक जँचा। उसने युवक की नौकरी छुड़ा दी और उन्नति का आश्वासन देकर राजा के सामने पेश किया। बहुत देर तक तो राजा को अपनी बात ही याद न आई, बाद में बोले, ”हाँ, उस समय शायद कोई बात मन में थी, पर मैंने अब तो कोई बात नहीं की है।" मंत्री ने कहा, "हुजूर! मैंने इसे हजारों में से छाँटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर लाया हूँ।“ राजा ने ज़रा सोचकर कहा, ”हमारे पास तो इस समय कोई काम नहीं है, पर तुम बहुत कह रहे हो, तो हम इसे अपने दफ्तर में चपरासी रख सकते हैं ।

वेतन पंद्रह रुपये मिलेगा।“ मंत्री को बुरा लगा, पर उस युवक ने कहा, "मेरे लिए सबसे बड़ा वेतन यह है कि मुझे अपने राजा की सेवा करने का मौका मिलेगा।“ यह कहकर वह उस नौकरी के लिए तैयार हो गया। मंत्री जब उसे दफ्तर में छोड़ने गया, तो वहाँ धूल थी,

क्योंकि राजा वहाँ न कभी जाते थे और न काम करते थे। यह देखकर मंत्री दुखी हुआ, परन्तु वह युवक इतना होने पर भी खुश था। उसने अच्छा स्थान दिलाने के लिए मंत्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

युवक ने लगातार कई दिनों तक उस दफ़्तर को साफ करके उसे शाही दफ्तर का रूप दे दिया। उस दफ़्तर में एक छोटी-सी कोठरी थी। युवक ने उसकी जाँच-पड़ताल की, तो पता चला कि पिछले सालों में बादशाह के पास जो निजी पत्र आए थे, उनके लिफ़ाफों का ढेर उस कोठरी में था।

उनमें से बहुत-से लिफ़ाफों पर सोने की पच्चीकारी थी और रत्न जड़े थे। ये वे लिफाफे थे जो विवाह जैसे शुभ अवसरों पर दूसरे राजाओं और अमीर-उमरावों के यहाँ से आए थे। युवक ने कारीगर लगाकर सब कीमती सामान लिफ़ाफ़ों पर से उतरवा लिया और बाज़ार में बेच दिया।

सामान बेचकर उसे कई हजार रुपये मिले। उनमें से कुछ रुपये तो उसने दफ़्तर में बढ़िया फर्नीचर और चित्र आदि लगाने में खर्च कर दिए और बाकी सरकारी खज़ाने में जमा कर दिए। जहाँ वह सामान बिका, उसने उसकी भी रसीद ली और जहाँ से यह सामान खरीदा गया, उसकी भी। दफ़्तर सचमुच शाही दफ़्तर हो गया। चुगलखोरों ने राजा से उसकी शिकायत की कि वह रुपया लुटा रहा है। एक दिन राजा गुस्से मंे भरे दफ्तर गए तो दफ्तर की हालत देखकर दंग रह गए, फिर भी उन्होंने तेज़ आवाज में पूछा, "तुमने यह सजावट किसके रुपये से की ?" "दफ्तर के रुपये से, हुजूर!“ कहकर उसने राजा को रद्दी लिफ़ाफ़ों की कहानी सुनाई और खजांची से गवाही दिलाई कि दफ़्तर का सामान खरीदने के बाद बचा हुआ रुपया खज़ाने में जमा किया गया है। राजा रीझ गए और उस युवक को अपने राज्य का वित्तमंत्री बना दिया। इस कारण दूसरे मंत्रियांे को परेशानी होने लगी, क्यांेकि वह न स्वयं बेईमानी करता था, न किसी को करने देता था, न लापरवाही करता

था, न करने देता था। उसके बाद से तो जो भी मंत्री राजा के पास जाता, किसी-न-किसी बहाने उस युवक की शिकायत करता, जिससे कि वह राजा की नजरों में गिर जाए।

एक रात को दो बजे राजा ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा, "हमारे सब मंत्रियों को, उनके घरों से उठाकर इस कमरे में ले आओ, लेकिन वे जिस हालत में हों, उसी हालत में लाया जाए। समझ लो, हमारे हुक्म को। अगर कोई पलंग पर सो रहा हो, तो उसे पलंग सहित ज्यों का त्यों लाया जाए और कोई कालीन पर बैठा चैपड़ खेल रहा हो, तो कालीन समेत यहाँ लाया जाए।“

एक घण्टे के भीतर ही सभी मंत्री महल के एक बड़े से कमरे में आ गए। राजा ने देखा कि आठ में से सात मंत्री नशे में थे। उनमें से कुछ जुआ खेल रहे थे। वित्त मंत्री भी बनियान पहने एक चैकी पर बैठे दीये की रोशनी में कोई काग़ज देख रहे थे। सभी मंत्री बहुत लज्जित हुए। तब राजा ने वित्तमंत्री से पूछा, ‘‘जनाब, रात में दो बजे किस काग़ज में उलझे हुए थे ?’’

उसने उत्तर दिया, ”हुजूर! दूर के इलाके से इस साल का जो राज-कर आया है, उसमें पिछले साल से एक पैसा कम है, तो बार-बार देख रहा था कि जोड़ में भूल है या सचमुच पैसा कम है।

“राजा ने अपने जेब से एक पैसा फेंककर कहा, लो, अब हिसाब ठीक कर दो और जाओ आराम करो।“

वित्त मंत्री ने नम्रता के साथ पैसा वापस करते हुए कहा, ”हुजूर! पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि पैसा कम है और उसके लिए पूछताछ न हुई, तो इससे अफ़सरो मंे

ढील और बेईमानी पैदा होगी।“ उसकी बात सुनकर राजा बहुत खुश हुए और उन्होंने उस युवक को राज्य का प्रधानमंत्री बना दिया।

कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर‘

कन्हैया लाल मिश्र ‘प्रभाकर’ का जन्म 29 मई 1961 में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द ग्राम में हुआ था। प्रभाकर जी हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार निबन्धकार, पत्रकार तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे। इनकी रचनाओं मंे ‘बाजे पायलिया के घुँघरू’, ‘दीप जले शंख बजे’, ‘तपती पगडंडियों पर पदयात्रा’ तथा ‘माटी हो गई सोना’ आदि प्रमुख है। इनका निधन 9 मई 1995 ई0 को हुआ था।

शब्दार्थ

कृतज्ञता = उपकार मानना, **आश्वासन** = आशा दिलाना, **पच्चीकारी** = जड़ना, नक्काशी | **चुगलखोर** = शिकायत करने वाला, **खजाँची** = खजाने का अधिकारी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को-

1. आपके यहाँ भी विवाह तथा अन्य प्रकार के आयोजनों से जुड़े तमाम लिफाफे आते होंगे। आप इनका उपयोग आप किस प्रकार कर सकते हैं। सोचिए/कीजिए।

2. इसी प्रकार घरों में बहुत सी चीजें रद्दी या कबाड़ समझकर फेंक दी जाती हैं। अपने घर में ऐसी वस्तुओं को खोजकर उनसे रचनात्मक चीजें तैयार कीजिए।

विचार और कल्पना

1. ईमानदारी से कार्य करने का क्या तात्पर्य है ? आपको कैसे पता चलता है कि आपके द्वारा कार्य ईमानदारी से किये गए ? ईमानदारीपूर्वक कार्य करने के क्या-क्या लाभ हैं ?

2. राजा के सात मंत्री नशे में पाए गए। नशे के क्या-क्या दुष्परिणाम होते है ? अपने विचार लिखिए।

कहानी से

1. किसने किससे कहा:-

(क) मुझे अपने लिए एक आदमी की जरुरत है।

(ख) मैंने इसे हजारों मंे से छँाटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ा कर लाया हूँ।

(ग) मुझे अपने राजा की सेवा करने का मौका मिलेगा।

(घ) इससे अफसरों में ढील और बेईमानी पैदा होगी।

2.. युवक ने कीमती सामान क्यों बेच दिया ?

3. ''हुजूर पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि पैसा कम है और इसके लिए पूछताछ न हुई तो इससे अफसरों में बेईमानी और ढील पैदा होगी।'' वित्तमंत्री ने ऐसा क्यों कहा?

4. राजा ने युवक को प्रधानमंत्री क्यों बनाया ?

5. कहानी में किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

राजा, रात, सोना, दिन, खुश, निगाह

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-

उन्नति, कृतज्ञ, बेईमान, अमीर, अच्छा

3. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिएः-

(क) पेन पेन्सिल और रबर लिखने के साधन हैं

(ख) क्या आपके विद्यालय में कम्प्यूटर है

(ग) वाह कितने सुन्दर फूल खिले हैं

(घ) गुरु शिष्य विद्यालय की शोभा हैं

4. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे- हार-गले में पहने जाने वाली माला।

हार-पराजय।

दिये गये अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए-

कर, मन, सोना, पत्र

5. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में आये हुए विशेषणों को रेखांकित कीजिए-

(क) बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर लाया हूँ।

(ख) दफ़्तर सचमुच शाही दफ़्तर हो गया है।

(ग) उन्होंने तेज आवाज में पूछा।

(घ) उसने राजा को रद्दी लिफ़ाफ़ों की कहानी सुनाई।

(ङ़.) सभी मंत्री महल के एक बड़े से कमरे में आ गये।

(च) सभी मंत्री बहुत लज्जित हुए।

इसे भी जानें

'रॉक गार्डन आॅफ चंडीगढ़' एक शिल्पकृत गार्डन अर्थात उद्यान है जो भारत के चंडीगढ़ राज्य में स्थित है। इसे मुख्यतः नेक चन्द सैनी' गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। लगभग 40 एकड़ मंे फैले इस गार्डन को 'नेकचन्द सैनी' ने कूड़े-करकट तथा बेकार की वस्तुएँ जैसे- सिरामिक, प्लास्टिक बोतलें, पुरानी तथा टूटी चूड़ियाँ, फ्यूज बल्ब, होल्डर तथा टूटी टाइल्स आदि से बनाया है।